श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सा विद्या या विमुक्तये

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : तृतीय वर्ष - १

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

DEC

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर

विद्यार्थी का नाम ANSWER SHEET 2020

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	आत्मसमाधि
(२)	मोहरूप
(३)	चंपानगरी
(४)	भव्य जीव
(५)	ढकार
(६)	पापमय
(७)	जैनधर्म
(८)	प्रभवस्वामी
(९)	रागद्वेष
(१०)	गोचरी
(११)	अपूर्वकरण
(१२)	श्रुतज्ञान
(१३)	अनभिग्रहिकमिथ्यात्व
(१४)	सिद्धिरूपी
(१५)	अभंग
(१६)	इर्यासमिति
(१७)	श्री ऋषभदत्त शेठ
(१८)	धर्म अधर्म
(१९)	वर्तमान जोग
(२०)	पू. आ. रत्नशेखरसूरि

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	गुण
(२)	श्री शय्यंभवसूरि
(३)	अनेकांत का
(४)	भय
(५)	मरुदेवामाता
(६)	प्रमत्तसंयत
(७)	पार्श्वनाथ
(८)	मंगलाचरण
(९)	सम्यक्त्व
(१०)	जगगुरु
(११)	आनंद
(१२)	कुछ है
(१३)	संसारवृद्दि
(१४)	ग्रंथिभेद से
(१५)	श्री सुधर्मास्वामी
(१६)	आगति
(१७)	सत्वर
(१८)	लेश्या
(१९)	पर्वतके शिखर
(२०)	दृष्टि

(५)	आगति
(६)	सत्वर
(७)	लेश्या
(८)	पर्वतके शिखर
(९)	दृष्टि
(१०)	चिनगारी से
(११)	पर्दोंद्वारा
(१२)	गये है
(१३)	संशय
(१४)	जीभवाले
(१५)	जानता
(१६)	सर्प
(१७)	तकलीफ
(१८)	स्मरण करते है
(१९)	फुल
(२०)	सुनो

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	तट, किनारा
(२)	संक्षिप्त
(३)	घर
(४)	नारकी

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	५
(२)	१	(७)	४
(३)	१०	(८)	८
(४)	९	(९)	७
(५)	2	(१०)	३

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	३०
(२)	९
(३)	१११
(४)	६
(५)	६२
(६)	२४
(७)	६ मास
(८)	चुम्मालिस
(९)	१४७
(१०)	६४

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	२५
(२)	✓	(२)	६
(३)	✓	(३)	१५
(४)	×	(४)	७
(५)	×	(५)	2
(६)	✓	(६)	१९
(७)	×	(७)	१०
(८)	×	(८)	१८
(९)	✓	(९)	१२
(१०)	×	(१०)	22

प्रश्न-१ मिले हुए गुण		प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण		प्रश्न-५ मिले हुए गुण		प्रश्न-६ मिले हुए गुण		प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________________

प्रश्न - ८

१. संयम के निर्वाह के लिए साधु आहार करता है। इसके सिवा क्षुधा वेदना याने भूख को शांत करने के लिए आहार करते है। हर एक साधु को ईर्यासमिती का शुद्ध पालन करना अनिवार्य है, इसके लिए आहार लेते है। जीव-रक्षा करने के लिए साधु आहार करते है। धर्मध्यान या शुभध्यान में स्थिरता टिकाये रखने हेतु साधु आहार करते है। बडों का विनय करने तथा उनकी वैयावच्च करने हेतु साधु आहार करते है। उपर के छः कारणों के सिवाय साधु आहार नही करते है। जब साधु आहार लेने के लिये निकलते है तब गुरु को वंदन कर, आज्ञा लेकर, ईर्यासमिती के उपयोगपूर्वक आहार लेने जाते है।

२. परंपरा से चले आये धर्म को ही सच्चा मानना वह "आभिग्राहिक मिथ्यात्व" है। सभी धर्म सच्चे है ऐसी समज अथवा बुद्धि वह "अनाभिग्राहिक मिथ्यात्व" है। मै जो कहता हु, मुझे जो अच्छा लगता है, वही धर्म सच्चा है ऐसी बुद्धि वह "आभिनिवेशिक मिथ्यात्व" है। पदार्थ का स्वरूप जिस तरह कहा है वैसा ही होगा अथवा अन्य रीत से होगा ऐसी शंका वह "सांशयिक मिथ्यात्व" है। अस्पष्ट चैतन्यवाले असंज्ञी जीवों को जो मिथ्यात्व मोहनीय का उदय होता है, वह "अनाभोगिक मिथ्यात्व" है। इस तरह पांच प्रकार के मिथ्यात्व है, जिसमे पहले चार व्यक्त मिथ्यात्व है और अंतिम अनाभोगिक मिथ्यात्व अव्यक्त मिथ्यात्व है।

३. नारकी, असरकुमारादि, पृथ्वीकायादि, बेइन्द्रियादि, गर्भज, तिर्यंच, मनुष्य व्यंतर, ज्योतिषि, वैमानिक ये चौवीस दंडक है। इनकी गिनती करने में आई है, वह ऐसी है - १) सात नारकी के एक दंडक २) असुरादि भवनपतियोंके दस दंडक ३) पृथ्वीकायादि स्थावर के पाँच दंडक ४) विकलेन्द्रिय के तीन दंडक ५) गर्भज तिर्यंच के एक दंडक ६) मनुष्यों के एक दंडक ७) व्यंतर के एक दंडक ८) ज्योतिषियोंका एक दंडक ९) वैमानिकों का एक दंडक। ये सब मिलके २४ होते है। गती अपेक्षा से नारकीका १ दंडक, तिर्यंच के २ दंडक, मनुष्य का १ दंडक, देवताओके १३ दंडक, सब मिलके २४ दंडक होते है।

४. प्रभव चोर ऋषभदत्त श्रेष्ठि के मंजील पर आया था, की जहा उनके सुपुत्र का विवाह आठ कन्याओं के साथ हुआ था, और इस इरादे से की, ऐसी चोरी फिर को जीवन में दूसरी बार चोरी ही नही करनी पडे। और यह मेरी अंतिम चोरी बन जाय। एकदम सावधानता से वह सातवी मंजिल तक पहुचा, वहा उसके कानो में बाते होती हो ऐसा आवाज आया। उसकी विद्या का कुछ उपयोग नही हुआ, तब दिवार को कान लगाया, वैराग्य की बाते सुनते ही प्रभव को झटका लगा, मोहनिद्रा में से आत्मा जाग गयी, रुद्र की आत्मा को खुब धिक्कारा, तुरंत जंबुकुमार के पास पहुंच गया, उनके चरणोंमें गिरकर, दीक्षा लेनेकी (उनके साथ) भावना व्यक्त करके, बाद में सुधर्मस्वामी के पास दीक्षा (५०० साथीयों के साथ) आत्मकल्याण किया।

५. जो पुरुष श्री पार्श्वनाथ प्रभु के चरण युगल में हमेशा नमन करते है, वे उग्र पवन से क्षोभ पाये समुद्र की उत्तुंग तरंगों के भयंकर शब्दो से और संभ्रम से, डर से विह्वल, बने हुये खलासीओ ने भी जिसमें स्वयं का व्यापार छोड दिया है, उसमें भी जहाज को अखंडित रखकर इच्छित किनारे को (तट को) क्षणभर में प्राप्त करते है।